# हस्तक्षेप

वर्ष- V
अंक- 16 (फरवरी 2020)

सामाजिक–राजनीतिक सूचना, चेतना व संवाद

# अपील

हमारा समूह ‘हस्तक्षेप’ पत्रिका प्रकाशित कर रहा है. इसमें देश-दुनिया की समसामयिक स्थिति का न्याय, बराबरी और सम्मान के प्रति प्रतिबद्धता के राजनैतिक नजरिये के साथ विश्लेषण की कोशिश की जा रही है. इसका प्रकाशन एक रिपब्लिक-सहकारिता के माध्यम से करने की योजना है. यह कोई व्यावसायिक पहल नहीं है. हम आपको साझेदारी और सहयोग के लिए आमंत्रित करते हैं.

पत्रिका का लोगो, मानव सभ्यता में प्रगति, संवाद तथा कोशिश का प्रतिक है. इसकी तीलियों को सामूहिक हस्तक्षेप के रूप में दिया गया है. इसकी अन्य कोई संकल्पना नहीं है.

**प्रधान संपादक**
रूपेश

**संपादक मंडल**
अरशद अजमल
संजय कुमार सिंह
प्रभाकर कुमार प्रजापति
रोहित राही

**सलाहकार**
निवेदिता झा
विनोद कुमार

**प्रबंधन**
ऋत्विज कुमार
मयूरी

**प्रकाशक**
कोशिश चैरिटेबल ट्रस्ट, अब्दीन हाउस, फ्रेज़र रोड, पटना- 01
वेब पेज: hastakshep.co.in
ईमेल: [hastakshep4change@gmail.com](mailto:hastakshep4change@gmail.com)
[article@hastakshep.co.in](mailto:article@hastakshep.co.in)

## इस अंक में

**आलेख** **पृष्ठ**

**संपादकीय** 05

**अर्थव्यवस्था बेहाल-सत्ता मालामाल** 06
संजय कुमार सिंह

**गुरुनानक एक दार्शनिक, योगी, गृहस्थ, समाजसुधारक, कवि और देशभक्त** 08
तेजस पुनिया

**अखबार पढ़ने की कला** 10
सलिल सरोज

**‘पहनावा : फैशन, जरूरत या दिखावा** 12
भूषण प्रसाद

**क्या है झारखंड की जनता को नयी सरकार से उम्मीद?** 13
रूपेश कुमार सिंह

**कहानी**

**फटा जूता** 15
नीरजा हेमेन्द्र

**कविताएँ**

**गेहूं का दाना** 19
डॉ. दलजीत कौर

**प्राणदायनी पृथ्वी** 19
पुनीत कुमार

# सम्पादकीय

विगत दिनों में घटे राजनीतिक घटनाक्रमों में सरकार बनाने के लिए जिन हथकंडों का उपयोग हुआ है ऐसे में “राजनीति में नैतिकता और भ्रष्टाचार” भूतकाल के मूल्य बन चुके हैं। कर्नाटक एवं महाराष्ट्र की राजनीतिक उठापटक में राज्यपाल जैसे संवैधानिक पद का राजनीतिक दुरुपयोग अत्यंत निंदनीय है साथ ही यह जनता के मताधिकार के साथ भी छलावा है जंहा चुनाव पूर्व हुए गटबंधन को तोड़ कर विरोधी दल साथ नज़र आ रहे हैं। जम्मू और कश्मीर में जनता और विधानसभा को विश्वास में लिए बिना जिस प्रकार से धारा 370 को समाप्त कर राज्य को दो भागों में बांटा गया है और शांति बहाली के लिए घाटी को प्रतिबंधों के एक लंबे दौर से गुजरना पड़ रहा है, इसके भारतीय जनतंत्र पर दूरगामी नकारात्मक परिणाम हो सकते हैं।

आर्थिक मोर्चे पर प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्रों में मंदी का स्पष्ट प्रभाव दिख रहा है। पेचीदा जीएसटी अभी तक संरचित नहीं हो पाई है और इसके अंतर्गत कर उगाही भी लक्ष्य से काफी दूर है। सरकार द्वरा सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों को बेच कर वित्तीय स्थिरता प्राप्त करने का प्रयत्न अत्यंत खेदजनक स्थिति है दूसरी ओर एनपीए बढ़ाने वाले कॉर्पोरेट क्षेत्र को करों में भारी छूट भी दी जा रही है। पंजाब एवं महाराष्ट्र को-ओपेराटिव बैंक घोटाले के बाद आम जनता में अपने पैसे के प्रति असुरक्षा पैदा हुई है, ऐसे में जनता अपने पैसे की गारंटी किससे प्राप्त करे यह एक सवाल है।

अयोध्या मसले पर सर्वोच्च न्यायालय का फैसला आ चुका है, यह तार्किकता पर आधारित आधुनिक राज्य की संकल्पना के विपरीत आस्था के प्रति सहमति प्रकट करने जैसा है जिसमे सबूतों को नजरंदाज कर दिया जाता है। यह “बहुसंख्यकवाद” को स्वीकृति है जिसका आधुनिक प्रजातांत्रिक राज्य में कोई स्थान नहीं होना चाहिए।

एनआरसी (नेशनल रजिस्टर ऑफ सिटीजन्स) पर हो रही राजनीति को तत्काल समाप्त करने की आवश्यकता है, यह अंतर्राष्ट्रीय नियमों का खुल्लमखुल्ला उल्लंघन है, साथ ही नागरिक साबित ना होने की अवस्था में इन नागरिता विहीन व्यक्तियों का भविष्य क्या होगा इस पर किसी प्रकार की नीति और सहमति नहीं बनी है। इस विषय पर गृह मंत्री के बयान ने एक धर्म विशेष में भय का माहौल उत्पन्न कर दिया है। यह मानवाधिकार को दरकिनार कर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर देश की “वसुधैव कुटुम्बकम्” छवि को भी धूमिल करता है।

उधर जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय में फीस वृद्धि कर एक केंद्रीय विश्वविद्यालय एक मंहगी संस्था बना कर जिस प्रकार से पिछड़े व वंचित तबके को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने से रोकने की साजिश हुई है यह शिक्षा के निजीकरण के माध्यम से प्राइवेट यूनीवर्सिटीज को बढ़ावा देने का प्रयास प्रतीत होता है किन्तु साथ ही यह जेएनयू कैंपस में सत्ता पक्ष से वैचारिक असहमति व खुलकर विरोध कर विपक्ष की भूमिका निभा रहे छात्रों की असहमति को कुचलने का भी प्रयत्न दिखता है। यह एक विशिष्ट विचारधारा के प्रति सहमति प्राप्त करने के स्थान पर जबरन थोपा जाने जैसा है। यद्यपि इस आंदोलन की मांग फीस बढ़ोत्तरी को वापिस लेने की है किन्तु हमारी आधारभूत मांग “निःशुल्क सार्वभौमिक शिक्षा” है जिसमें समाज का कोई भी तबका पैसे के अभाव में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से वंचित ना रहे।

* रुपेश

# अर्थव्यवस्था बेहाल-सत्ता मालामाल

* संजय कुमार सिंह

***प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मुद्रा योजना ने भी एनपीए की राह पकड़ ली है। 2015 में इस योजना की शुरुआत की गई थी जिसके तहत छोटे और मंझोले उद्योगों को सस्ते दर पर बैंकों से कर्ज दिया जाता है। आज स्थिति यह है कि इसके अंतर्गत एनपीए 3.21 लाख करोड़ रुपये हो चुका है। बैंकों का कर्ज डूबता रहेगा जब तक सरकार छोटे एवं मंझोले उद्योगों के लिए बाज़ार उपलब्ध नहीं कराती है।***

भारत सरकार द्वारा जारी जीडीपी के नए आंकड़े इस बात की पुष्टि करते हैं की अर्थव्यवस्था की स्थिति चिंताजनक है। जुलाई-सितंबर, 2019 की तिमाही के दौरान आर्थिक विकास दर घटकर महज 4.5 फीसदी रह गई, जो 6 सालों में सबसे निचले स्तर पर है तथा पिछले वर्ष की समान अवधि से 2.7 फीसदी कम है। यह लगातार छठी तिमाही है जब जीडीपी में गिरावट दर्ज की गई है। इससे पहले जनवरी-मार्च, 2013 तिमाही में जीडीपी विकास दर 4.3 फीसदी रही थी। विकास दर में कमी से स्पष्ट है कि निवेश, बाजार, रोजगार और लोगों के आय की स्थिति डांवाडोल है।

अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में विकास दर पर नजर डालते हैं तो पाते हैं कि सभी क्षेत्र मंदी के दौर से गुजर रहे हैं। इंडस्ट्री की ग्रोथ रेट 6.7% से गिरकर सिर्फ़ आधा प्रतिशत रह गई है। इसमें भी मैन्युफ़ैक्चरिंग में आधे प्रतिशत की गिरावट दर्ज हुई है। कृषि क्षेत्र (4.9 से गिरकर 2.1%), सर्विसेज़ (7.3% से गिरकर 6.8) तथा कोर सेक्टर में 5.2 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई है।

सरकार द्वारा जारी आंकड़ों के मुताबिक अप्रैल से अक्तूबर की अवधि में सरकार ने 16.55 लाख करोड़ रुपये खर्च किए लेकिन कमाई 6.83 लाख करोड़ रुपये ही हुई (स्रोत- अमर उजाला, 29 नवंबर, 2019)। अर्थात आमदनी अठन्नी और खर्चा रुपया। अत: तय है कि राजकोषीय घाटा जीडीपी का 3.3 फीसदी से अधिक रहेगा।

इस दौरान, वैश्विक मंदी से निर्यात प्रभावित हुआ है। सरकार की ओर से जारी आंकडों के अनुसार चालू वित्त वर्ष में अभी तक कुल निर्यात में 2.21 प्रतिशत की गिरावट आई है (Moneybhaskarlcom, 16th Nov, 2019)।

निर्यात में कमी का आशय है कि निर्यात के लिए माल बनाने वाले उद्योगों का हाल बेहाल है। खासकर कपड़ा, चमड़ा, हीरा-जवाहरात पर अंतर्राष्ट्रीए मंदी का बुरा असर पड़ा है। नतीजतन निवेश में कमी और छंटनी चालू है।

इस दौरान सरकारी ख़र्च में 15.6 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इस कारण विकास दर में थोड़ी तेजी दिखी नहीं तो अर्थव्यवस्था की हालत और भी खराब होती। तो फिर निजी क्षेत्रों का योगदान कहाँ गया? निजी क्षेत्रों की विकास दर में योगदान लगभग नहीं के बराबर रहा है। बिजनेस स्टैंडर्ड के एक रिपोर्ट के अनुसार 484 कंपनियों ने इतनी भी नहीं कमाई कि वे बैंकों से लिए कर्ज का सूद भी चुका सकें। इस वर्ष के सितम्बर महीने के अंत तक इन कंपनियों पर 5.6 ट्रिलियन रुपए का बकाया है। कॉर्पोरेट सेक्टर का कर्ज हमारे कुल जी.डी.पी. का 56% है, जो हमारी अर्थव्यवस्था के लिए घातक साबित हो रहा है।

आंकड़ों के मुताबिक, कोर सेक्टर के कोयला, कच्चा तेल, प्राकृतिक गैस तथा रिफाइनरी उत्पादों की वृद्धि दर नेगेटिव रही है। औटोमोबिल सेक्टर, आई.टी. सेक्टर, आदि में मंदी का दौर चल रहा है। पर्व–त्योहार का मौसम रहने के बावजूद निजी वाहनों की बिक्री में कमी आई.आई.टी. सेक्टर में मांगों में कमी के कारण हजारों लोगों के नौकरियों पर तलवार लटकी हुई है। रियल एस्टेट सेक्टर तो पिछले कई वर्षों से मंदी से गुजर रहा है। दिल्ली, मुंबई और अन्य बड़े शहरों में लाखों फ्लैट खरीददारों के अभाव में खाली पड़े हुए हैं दूसरी ओर आम लोगों के लिए घर एक सपना ही है।

इस आर्थिक मंदी में आमजन दो जून की रोटी जुटा ले वही बहुत है। उसके खर्च करने की क्षमता में लगातार गिरावट आ रही है। नेशनल स्टैटिस्टिकल ऑफिस (एनएसओ) की रिपोर्ट से खुलासा हुआ है कि 40 साल में अब पहली बार उपभोक्ता खर्च में गिरावट आई है। इस रिपोर्ट के अनुसार पिछले चालीस सालों में वर्तमान समय में लोग प्रति महीने सबसे कम खर्चा कर रहे हैं। बिजनेस स्टैंडर्ड की एक रिपोर्ट के मुताबिक, 'स्टेट इंडिकेटर्स: होम कंज्यूमर एक्सपेंडिचर इन इंडिया' शीर्षक से लीक हुए एनएसओ के सर्वे में पता चलता है कि एक महीने में एक भारतीय द्वारा खर्च की गई औसत राशि 2011-12 में 1,501 रुपये से गिरकर 2017-18 में 1,446 रुपये (3.7 प्रतिशत की गिरावट) रह गई है अर्थात् 48.2 रुपये रोजाना। इतने पैसे में

किसी शहर मेँ एक आदमी ठीक से भर पेट भोजन भी नहीं कर सकता है। गाँव मेँ मजदूरों और छोटे किसानों की हालत और भी खराब हुई है। इस रिपोर्ट के अनुसार गावों मेँ लोगों के क्रय शक्ति में 8.8 प्रतिशत की कमी आई है। अब वे भोजन पर प्रति माह मात्र 580 रुपए खर्च करते हैं जबकि 2011-12 में 643 रुपए करते थे। इतने पैसों मेँ एक व्यक्ति क्या खाएगा, यह सोच के परे है। ग्लोबल हंगर इंडेक्स 2019 के अनुसार गरीब ग्रामीण परिवार अपनी आमदनी का 60 प्रतिशत भोजन पर खर्च करता है फिर भी वह शरीर के लिए जरूरी प्रोटीन, वसा और मिनरल नहीं प्राप्त कर सकता है (आकड़ों का स्रोत : Rural Distress, The Statesman-02 Dec, 2019)। इससे स्पष्ट है कि लोगों की आमदनी इतनी नहीं है कि वे बढ़ती हुई महंगाई से निपट सकें।

विशेषज्ञों के अनुसार इस चरमराती हुई अर्थवयवस्था को पटरी पर लाने के लिए सरकार ने कई कदम उठाए जिसका लाभ लोगों तक पहूँचने में समय लगेगा। किन्तु नोटबंदी के बाद भी यही राग आलापा गया था, इससे अर्थव्यवस्था को कितनी मजबूती मिली है यह हम सभी जानते हैं।

सरकार द्वारा उठाए गए कदमों में खास है कॉरपोरेट टैक्स में कमी लाना। सरकार ने कॉरपोरेट टैक्स को 30 फीसदी से घटाकर 22 फीसदी किया है। मंदी के दौर में सरकार द्वारा लिया गया यह कदम ना ही विकास को बढ़ावा देगा ना ही अधिक रोजगार पैदा होंगे क्योंकि कॉरपोरेट जगत आर्थिक मंदी के दौर में निवेश से भाग रहा है। हाँ! इस घोषणा के बाद शेयर बाजार में तेजी जरूर आई लेकिन इससे आम आदमी के हाँथ में अठन्नी भी नहीं आयेगी क्योंकि वे शेयर बाजार के खिलाड़ी नहीं हैं। इससे मात्र कॉर्पोरेट सेक्टर, धनिकों और मध्यम वर्ग के एक छोटे तबके को ही लाभ पहुँचेगा।

डूबते हुए सरकारी बैंकों को उभारने के लिए सरकार ने 70,000 करोड़ रुपये का पैकेज दिया है। इससे बैंकों को कुछ राहत मिलेगी लेकिन सरकार ने अभी तक इन बैंकों का धन लूटने वाले कर्जखोरों पर शिकंजा कसने के लिए कोई नीति नहीं बनाई है। इन कर्जखोरों से निबटने के लिए सरकार द्वारा लाई गई बैंकरप्सी कानून नाकाफी है। इसका नतीजा होगा कि यह पैसा भी विकास और रोजगार पैदा करने के नाम पर लूट लिया जाएगा।

सामाजिक अशांति, महिलाओं, बच्चियों पर जुल्म, सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े समुदाय एवं अल्पसंख्यकों के साथ भेद-भाव का असर अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों पर गहराई से पड़ता है। दूसरी ओर पर्यावरणीय असंतुलन एवं लोक स्वास्थ्य में गिरावट का विकास पर पड़ने वाले दुष्परिणामों जैसे विषयों पर सरकार गंभीर नहीं दिख रही है। ऐसे चिंतनीय विषय पर शोध-अध्ययन के माध्यम से सरकार को नीति और रणनीति बनाने की आवश्यकता है जिस दिशा में कोई पहल नहीं दिखता।

मोदी सरकार धन जुटाने के लिए पब्लिक सेक्टर को बेच रही है या उसमें सरकारी हिस्सेदारी को कम कर रही है। 2018-19 में सरकार ने विनिवेश करके 84972.16 करोड़ अर्जित किए जबकि लक्ष्य था 80,000 करोड़ का। 2019-20 में लक्ष्य है 1.05 करोड़ का और 29 कंपनियों को विनिवेश करने के लिए चिन्हित किया गया है। घर बेचकर ज़िंदगी जीने वाले मालिक को नकारा कहते हैं। वर्तमान सरकार इसी श्रेणी में है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मुद्रा योजना ने भी एनपीए की राह पकड़ ली है। 2015 में इस योजना की शुरुआत की गई थी जिसके तहत छोटे और मंझोले उद्योगों को सस्ते दर पर बैंकों से कर्ज दिया जाता है। आज स्थिति यह है कि इसके अंतर्गत एनपीए 3.21 लाख करोड़ रुपये हो चुका है। बैंकों का कर्ज डूबता रहेगा जब तक सरकार छोटे एवं मंझोले उद्योगों के लिए बाज़ार उपलब्ध नहीं कराती है।

एक नज़र बेरोजगारी के आकड़ों पर डालते हैं तो पाते हैं कि कोई ऐसा सेक्टर नहीं जिसमे रोजगार में कटौती नहीं हो रही है। सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी (सीएमआईई) के द्वारा जारी किए गए आंकड़ों के अनुसार बेरोजगारी दर अक्टूबर महीने में 8.5 फीसदी रही है (अमर उजाला, 1 नवम्बर, 2019)। ऑटोमोबाइल उद्योग में 2 लाख से अधिक लोगों की रोजगार जा चुकी है।

अर्थव्यवस्था चलने के लिए जरूरी है कि लोगों को नौकरी मिले और उनकी आय में वृद्धि हो तथा आर्थिक असमानता में कमी आए० छोटे एवं मंझोले उद्योग को क्रेडिट और बाजार सुनिश्चित हो, कृषि और कृषि आधारित उद्योगों का विकास पर ज़ोर हो, खास कर कृषि से जुड़े लोगों की क्रय शक्ति में वृद्धि हो। हो रहा है इसके विपरीत जिसमें सरकार सामाजिक एवं धार्मिक भेद–भाव के माध्यम से राजनीतिक माइलेज लेने में लगी हुई है। इसमें सत्ताधारी दल को राजनीतिक लाभ मिल भी रहा है। किन्तु क्षणिक राजनीतिक लाभ प्राप्त करने में दूरगामी आर्थिक लक्ष्यों को नज़रअंदाज़ नहीं किया जाना चाहिए।

***(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं, ssanjaykumarsingh52@gmail.com)***

# गुरुनानक एक दार्शनिक, योगी, गृहस्थ, समाजसुधारक, कवि और देशभक्त

* तेजस पुनिया

***नानक अपने व्यक्तित्व में दार्शनिक, योगी, गृहस्थ, धर्मसुधारक, समाजसुधारक, कवि, देशभक्त और विश्वबंधु - सभी के गुण समेटे हुए थे। कई सारे लोगो का मानना है कि बाबा नानक एक सूफी संत भी थे। और उनके सूफी कवि होने के प्रमाण भी समय-समय पर लगभग सभी इतिहासकारों द्वारा दिए जाते है।***

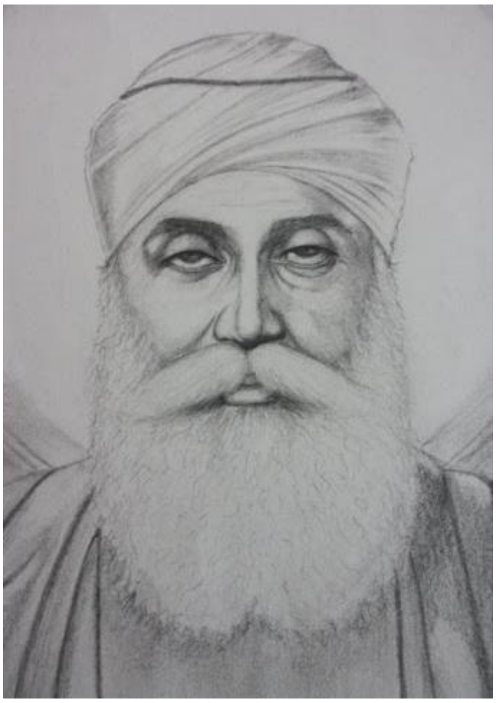

10 वें सिक्ख गुरूओं के प्रथम गुरू गुरुनानक सिक्ख पंथ के संस्थापक थे। जिन्होंने धर्म में एक नई लहर उत्पन्न की । सिख गुरूओं में प्रथम गुरू नानक का जन्म 1469 में लाहौर के निकट तलवंडी (ननकाना साहिब पाकिस्तान) में हुआ था । समाज में कई धर्मों के चलन व विभिन्न देवताओं को स्वीकार करने की अरुचि ने व्यापक रूप में यात्रा किए हुए नेताओं को धार्मिक विविधता के बंधन से मुक्त होने, तथा एक प्रभु जो कि शाश्वत सत्य है के आधार पर धर्म की स्थापना करने की प्रेरणा दी । गुरू नानक जयन्ती के त्यौहार में, तीन दिन का अखण्ड पाठ, जिसमें सिक्खों की धर्म पुस्तक "गुरू ग्रंथ साहिब" का पूरा पाठ बिना रुके किया जाता है, शामिल है । मुख्य कार्यक्रम के दिन गुरू ग्रंथ साहिब को फूलों से सजाया जाता है, और एक बेड़े (फ्लोट) पर रखकर जुलूस के रूप में पूरे गांव या नगर में घुमाया जाता है। शोभायात्रा की अगुवाई पांच सशस्त्र गार्डों, जो 'पंज प्यारों' का प्रतिनिधित्व करते हैं, तथा निशान साहब, अथवा उनके तत्व को प्रस्तुत करने वाला सिक्ख ध्वज, लेकर चलते हैं, द्वारा की जाती है । पूरी शोभायात्रा के दौरान गुरूवाणी का पाठ किया जाता है, अवसर की विशेषता को दर्शाते हुए, गुरू ग्रंथ साहिब से धार्मिक भजन गाए जाते हैं । शोभायात्रा अंत में गुरूद्वारे की ओर जाती है, जहाँ एकत्रित श्रद्धालु सामूहिक भोजन, जिसे लंगर कहते हैं, के लिए एकत्रित होते हैं। और पंजाबी भाषा में इसे लंगर छकना भी कहा जाता है।

"एक ओंकार सतनाम, करता पुरख निरभऊ।
निरबैर, अकाल मूरति, अजूनी, सैभं गुर प्रसाद ।।"

गुरु नानक देव सिक्खों के प्रथम गुरु व 'सिक्ख धर्म' के संस्थापक थे। वे एक महापुरुष व महान धर्म प्रर्वतक थे जिन्होंने विश्व से सांसारिक अज्ञानता को दूर कर आध्यात्मिक शक्ति को आत्मसात् करने हेतु प्रेरित किया। इनके अनुयायी इन्हें नानक, नानक देव जी, बाबा नानक और नानकशाह नामों से संबोधित करते हैं। लद्दाख व तिब्बत में इन्हें नानक लामा भी कहा जाता है। नानक अपने व्यक्तित्व में दार्शनिक, योगी, गृहस्थ, धर्मसुधारक, समाजसुधारक, कवि, देशभक्त और विश्वबंधु - सभी के गुण समेटे हुए थे। कई सारे लोगो का मानना है कि बाबा नानक एक सूफी संत भी थे। और उनके सूफी कवि होने के प्रमाण भी समय-समय पर लगभग सभी इतिहासकारों द्वारा दिए जाते है।

सांसारिक अज्ञानता के प्रति गुरु नानक देव का कथन है:

"रैन गवाई सोई कै, दिवसु गवाया खाय। हीरे जैसा जन्मु है, कौड़ी बदले जाय।"

उनकी दृष्टि में ईश्वर सर्वव्यापी है। गुरु नानक देव एक महान आत्मा थे जो सादा जीवन उच्च विचार के सिद्धांत का पालन करते थे। उन्होंने अपने अनुयायियों को जीवन में उच्च सिद्धान्त का अनुपालन करने हेतु प्रेरित किया। गुरु साहब ने 'गुरुग्रंथ साहब' नामक ग्रंथ की रचना पंजाबी भाषा और गुरुमुखी लिपि में की। इसमें कबीर, रैदास व मलूकदास जैसे भक्त कवियों की वाणियाँ सम्मिलित हैं। 70 वर्षीय गुरु नानक सन् 1539 ई० में अमरत्व को प्राप्त कर गए। परन्तु उनकी मृत्यु के पश्चात् भी उनके उपदेश और उनकी शिक्षा अमरवाणी बनकर हमारे बीच उपलब्ध हैं जो आज भी हमें जीवन में उच्च आदर्शों हेतु प्रेरित करती रहती हैं।

उनकी जयंती पर उन्हीं के कुछ अनमोल वचन।

मृत्यु को बुरा नहीं कहा जा सकता, अगर हमें पता हो कि वास्तव में मरते कैसे हैं।

भगवान के लिए प्रसन्नता के गीत गाओ, भगवान के नाम की सेवा करों और ईश्वर के बन्दों की सेवा करो।

ईश्वर की हजार आँखे हैं फिर भी एक आँख नहीं, ईश्वर के हजार रूप हैं फिर भी एक नहीं।

धन धन्य से परिपूर्ण राज्यों के राजाओं की तुलना एक चींटी से नहीं की जा सकती जिसका ह्रदय ईश्वर भक्ति से भरा हुआ हैं।

मैं जन्मा नहीं हूँ फिर कैसे मेरे लिए जन्म और मृत्यु हो सकते हैं।

ईश्वर एक हैं परन्तु कई रूप हैं वही सभी का निर्माण करता हैं व्ही मनुष्य रूप में जन्म लेता हैं।

किसी भी व्यक्ति को भ्रम में नहीं जीना चाहिये। बिना गुरु के किसी को किनारा नहीं मिलता।

ना मैं बच्चा हूँ न ही युवा, ना ही पुरातन और न ही मेरी कोई जात हैं।

नानक सर्वेश्वरवादी थे । मूर्तिपूजा उन्होंने सनातन मत की मूर्तिपूजा की शैली के विपरीत एक परमात्मा की उपासना का एक अलग मार्ग मानवता को दिया । उन्होंने हिंदू धर्म मे फैली कुरीतियों का सदैव विरोध किया । उनके दर्शन में सूफीयों शैली जैसी थी । साथ ही उन्होंने तत्कालीन राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक स्थितियों पर भी नज़र डाली है । संत साहित्य में नानक उन संतों की श्रेणी में हैं जिन्होंने नारी को बड़प्पन दिया है ।

भाई गुरुदासजी लिखते हैं कि इस संसार के प्राणियों की त्राहि-त्राहि को सुनकर अकाल पुरख परमेश्वर ने इस धरती पर गुरु नानक को पहुंचाया, 'सुनी पुकार दातार प्रभु गुरु नानक जग महि पठाइया। 'उनके इस धरती पर आने पर 'सतिगुरु नानक प्रगटिआ मिटी धुंधू जगि चानणु होआ' सत्य है, नानक का जन्मस्थल अलौकिक ज्योति से भर उठा था । उनके मस्तक के पास तेज आभा फैली हुई थी ।

पुरोहित पंडित हरदयाल ने जब उनके दर्शन किए उसी क्षण भविष्यवाणी कर दी थी कि यह बालक ईश्वर ज्योति का साक्षात अलौकिक स्वरूप है । बचपन से ही गुरु नानक का मन आध्यात्मिक ज्ञान एवं लोक कल्याण के चिंतन में डूबा रहता । बैठे-बैठे ध्यान मग्न हो जाते और कभी तो यह अवस्था समाधि तक भी पहुंच जाती । इनके अनुसार 'नाम जपना, किरत करना, वंड छकना' सफल गृहस्थ जीवन का मंत्र है ।

वे कहते हैं- 'सबको ऊंचा आखिए/ नीच न दिसै कोई। 'गुरुजी ने ऐसे मनुष्यों को प्रताड़ित किया है, जिनके मन में जातीय भेदभाव है और कहा कि वह मनुष्य नहीं, पशु के समान है- जीनके भीतर हैं अंतरा जैसे पशु तेसे वो नरा'। ऊंच-नीच के भेदभाव मिटाने के लिए गुरुजी ने कहा कि मैं स्वयं भी ऊंची जाति कहलाने वालों के साथ नहीं बल्कि मैं जिन्हें नीची जात कहा जाता है, उनके साथ हूँ। 'नीचा अंदरि नीच जाति, नीचिंहु अति नीचु/ नानक तिन के संग साथ, वडिया सिऊ किया रीस।

गुरुनानक देवजी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व जितना सरल, सीधा और स्पष्ट है, उसका अध्ययन और अनुसरण भी उतना ही व्यावहारिक है। गुरु नानक वाणी, जन्म साखियों, फारसी साहित्य एवं अन्य ग्रंथों के अध्ययन से यह सिद्ध होता है कि गुरुनानक उदार प्रवृत्ति वाले स्वतंत्र और मौलिक चिंतक थे।

एक सामान्य व्यक्ति और एक महान आध्यात्मिक चिंतक का एक अद्भुत मिश्रण गुरु नानकदेवजी के व्यक्तित्व में अनुभव किया जा सकता है। 'वे नबी भी थे और लोकनायक भी, वे साधक भी थे और उपदेशक भी, वे शायर एवं कवि भी थे और ढाढ़ी भी, वे गृहस्थी भी थे और पर्यटक भी।'

***(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं, tejaspoonia@gmail.com)***

# अखबार पढ़ने की कला

* सलिल सरोज

**जो व्यक्ति अखबार पढ़ने की शुरुआत कर रहा है उसे अपनी रूचियों का पता होना आवश्यक है। यदि किसी को खेल में रुचि है तो वह खेल के खबर को ही रोज़ पढ़ना शुरू करे। यदि किसी को फिल्मों में रुचि है तो फ़िल्मी खबर और किसी को राजनीति में रुचि है तो राजनीति की तमाम ख़बरों को पढ़कर अखबार पढ़ने के आदत को विकसित कर सकता है।**

किस भी कार्य को सम्पादित करने में जो तथ्य सबसे महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है,वह है-रुचि। यदि आपकी रुचि संगीत सुनने में है तो आप स्वयं ही अपने व्यस्त दिनचर्या में भी उसके लिए समय निकाल ही लेंगे। बस में, ट्रेन में, मेट्रो में या फिर रोड पर चलते हुए भी आप हेडफोन लगाकर ऑफिस पहुँचने के क्रम में और ऑफिस के बाद घर पहुँचने के दौरान संगीत का लुत्फ़ उठा ही लेंगे। कतिपय समान अवयव काम आती है अखबारों को पढ़ने के प्रति लगाव पैदा करने में। यदि एक बार रुचि पैदा हो गई तो आप एक दिन में एक ही नहीं कई अखबार पढ़ जाएंगे और स्वयं को ज्ञान से परिपूर्ण महसूस करेंगे।

जो व्यक्ति अखबार पढ़ने की शुरुआत कर रहा है उसे अपनी रूचियों का पता होना आवश्यक है। यदि किसी को खेल में रुचि है तो वह खेल के खबर को ही रोज़ पढ़ना शुरू करे। यदि किसी को फिल्मों में रुचि है तो फ़िल्मी खबर और किसी को राजनीति में रुचि है तो राजनीति की तमाम ख़बरों को पढ़कर अखबार पढ़ने के आदत को विकसित कर सकता है। धीरे-धीरे अन्य ख़बरों की तरफ भी ध्यान खुद-ब-खुद जाने लगता है। जैसे कि यदि कोई व्यक्ति,खेल का प्रेमी है तो शुरू में वह शुद्ध खेल के ख़बरों तक ही सीमित रहता है। बाद में वह अपने प्रिय खिलाड़ी के जीवन से जुडी बातें जैसे कि उसकी शादी किसी अभिनेत्री से हुई है तो वह फ़िल्मी ख़बरों की तरफ भी बढ़ना शुरू करता है। यदि उसके प्रिय खिलाड़ी ने कोई टीम खरीदी है तो वह व्यापार की ख़बरों को भी तवज्जो देना शुरू करता है। यदि खिलाड़ी किसी राजनितिक पार्टी से जुड़ जाता है तो उसका ध्यान राजनीतिक हलचलों की तरफ भी जाने लगता है और यदि खिलाड़ी किसी चैरिटेबल संस्था या शैक्षिक संस्था से जुड़ा हो तो पाठक साहित्यिक और विविध ख़बरों से भी रू-ब-रू होना शुरू करता है। इस तरह क्रमानुसार एक नवोदित पाठक सम्पूर्ण अखबार पढ़ने लगता है।

मेरी प्रारंभिक शिक्षा (वर्ग 6 से 12 तक) तिलैया डैम के हृदय में बसे स्कूल सैनिक स्कूल तिलैया, कोडरमा डैम से पूर्ण हुई। मेरा नामांकन इस प्रतिष्ठित विद्यालय में 16 अगस्त 1997 में हुआ और यहीं से अखबार को पढ़ने की सही शुरुआत हुई। हालाँकि पहले अखबारों में फ़िल्मी हीरो-हीरोईन की तस्वीरें दिखने और उनकी कटिंग करना ही हमारे लिए अखबार पढ़ना होता था। लेकिन सैनिक स्कूल में हर हॉस्टल में सिर्फ अंग्रेजी अखबार आते थे ताकि हमारी अंग्रेज़ी भाषा ठीक हो सके। इसके लिए एक और क़ानून था- इंग्लिश स्पीकिंग कार्ड। रात को सोने से पहले जो छात्र हिंदी बोलता हुआ पकड़ा जाता था उसे यथोचित दण्ड भुगतना पड़ता था। और सैनिक स्कूल का यथोचित दंड इतना ज्यादा होता था की हर छात्र उससे बचने की कोशिश में इंग्लिश बोलने की भरपूर कोशिश करता था। हालाँकि इसका तोड़ भी मिल गया था कि 10 छात्रों के समूह में हर छात्र नियत दिन पर हिंदी बोल दे ताकि एक ही छात्र दंड का भागी ना बनता रहे। पर, इसके बावजूद भी, यह तरीका इंग्लिश सिखाने का एक अच्छा तरीका कहा जा सकता था। मेरे छात्रावास पाटलिपुत्र में अंग्रेज़ी अखबार “द टाइम्स ऑफ़ इंडिया” आता था। सीनियर्स के पढ़ने के बाद सबसे बाद में हमारे पास यह अखबार आता था। हमारे पास पहुँचते-पहुँचते सम्पादकीय, देश-विदेश की ख़बरों वाला पन्ना लाल-पीले इंक से भरा होता था। चूँकि सीनियर्स अखबारों से खबरें निकाल कर उसे डिबेट और डिस्कशन में इस्तेमाल करते थे इसलिए अखबारें रंगीन हो जाया करती थीं। जो पन्ना सबसे साफ़ और पढ़ने लायक बचता था वो था खेल और फ़िल्मी ख़बरों का और मुझे इन दोनों में ही रुचि थी। मैं रात के लगभग 9 बजे अपने उन ख़बरों को पढ़ने के क्रम में कठिन 5 शब्दों के अर्थ भी अलग से लिखता जाता और उसे इस्तेमाल करने की भी कोशिश करता। उस समय फ़िल्मी ख़बरों को पढ़ते-पढ़ते मैंने scintillating, ravishing, titillating खेल के पृष्ठों से catch-22 position, menacing, death-defying जैसे शब्दों को सीखा और आज तक यह मेरे जेहन में ज्यों के त्यों बसी हुई हैं। इसी तरह से नए शब्द सीखते-सीखते आलम यह हुआ कि मैंने जब एक सीनियर की डायरी लिखी तो अनेक शब्दों के अर्थ जानने के लिए उन्हें मुझे बुलाना पड़ा।

हालाँकि यह उनकी कहीं-न-कहीं हार थी या नहीं पता नहीं पर मेरी जीत जरूर थी।

2011 में मैंने दिल्ली में वाजीराम एन्ड रवि में सिविल सेविसेस की कोचिंग की। वहाँ शिक्षकों ने अखबार को वैज्ञानिक ढंग से पढ़ने की बात बताई। अभी तक मैं अखबार को अपने दिनचर्या में शामिल कर चुका था लेकिन अब अखबार को बाइबिल की तरह पढ़ने की बारी थी। इस तरह की परीक्षाओं में कुछ भी पूछा जा सकता था। अतः हरेक पेज जो ध्यान से पढ़ते हुए, अंडरलाइन करते हुए उसकी कटिंग करके स्क्रैप बुक भी बनाना पड़ता है। हालाँकि 5-6 स्क्रैप बुक मैंने वर्ग 10 तक खिलाड़ियों के फोटो के तैयार कर लिए थे लेकिन वह सिर्फ मेरे  मनोरंजन के लिए था लेकिन अब बात एग्जाम क्लियर करने की थी। अखबार को पढ़ने का वक़्त तय था-गाड़ी में आते और जाते हुए। कोचिंग के लिए आते हुए सम्पादकीय, देश-विदेश की खबरें और वापस जाते हुए बाकी ख़बरों को पढ़ लेना होता था। और यकीन मानिए यह सिलसिला 8 महीनों तक इस खूबसूरती से चला कि किसी भी दिन का अखबार पढ़े बिना छूटा नहीं और परीक्षा से पहले बेहतरीन स्क्रैप बुक भी तैयार हो गई। इस स्क्रैप बुक ने 2016 के सिविल सर्विसेज में कमाल ही कर दिया।  उस साल प्रारंभिक परीक्षा में लगभग 60 प्रतिशत सवाल करेन्ट अफेयर्स से आए थे और वो साड़ी खबरें मैंने स्क्रैप बुक में कई बार पढ़ रखे थे। परिणाम यह हुआ कि मुझे उस साल प्रारंभिक परीक्षा के सबसे बेहतरीन अंक प्राप्त हुए और मैं मुख्य परीक्षा के लिए क्वालीफाई हो गया था। वैज्ञानिक ढंग से अखबार पढ़ना कब मेरी दिनचर्या का हिस्सा बन गया और मुझे इतना फायदा पहुँचा गया, मुझे पता भी नहीं चला।

हर उम्र में अखबार पढ़ने का कारण अलग होता है। बचपन में मनोरंजन के लिए, युवावस्था में परीक्षा निकालने के लिए और वृद्धावस्था में समय गुजारने के लिए। हालाँकि कारण जो भी हो, अखबारों को तरीके से पढ़ने से यह हर उम्र के व्यक्ति को लाभान्वित करता है।

***(कार्यकारी अधिकारी, लोकसभा सचिवालय, संसद भवन, नई दिल्ली, salilmumtaz@gmail.com)***

# पहनावा : फैशन, जरूरत या दिखावा

* भूषण प्रसाद

**ससुराल से जब अलग-अलग डिज़ाइन, रंग एवं क्वालिटी का कपड़ा मिल जाये तो उसका क्या कहना। कई लोगों को शायद मिलता होगा लेकिन वे उसका गुणगान उतना शायद नहीं कर पाते, लेकिन मुझे कपड़ा के नाम पर ससुराल का गुणगान करना वैसे ही अच्छा लगता है जैसे कि बरसाती फ़ुहारा से मोर पंख फैलाकर नाचने लगता है।**

मैं कपड़ा पहनने का शौक़ीन हूँ। लकिन महंगे शोरूम या बड़े-बड़े मॉल में मिलने वाले ब्रांडेड कपड़ों से दूर रहा हूँ। मेरा मानना है कि महंगे ड्रेस से अच्छा उसी दाम में 3 या 4 सेट होने वाला कपड़ा ज्यादा अच्छा होता है। मैं वो कपड़ा ज्यादा पहनना पसंद करता हूँ जो गिफ्ट या मुफ़्त में मिल जाता है। खासकर ससुराल से जब अलग-अलग डिज़ाइन, रंग एवं क्वालिटी का कपड़ा मिल जाये तो उसका क्या कहना। कई लोगों को शायद मिलता होगा लेकिन वे उसका गुणगान उतना शायद नहीं कर पाते, लेकिन मुझे कपड़ा के नाम पर ससुराल का गुणगान करना वैसे ही अच्छा लगता है जैसे कि बरसाती फ़ुहारा से मोर पंख फैलाकर नाचने लगता है। पहनने के बाद यदि कोई तारीफ करता है तो ससुराल की खट्टी-मीठी याद ताजा हो जाती है। मेरे पास इतने कपड़े हैं कि सरलता से बताना या याद रखना संभव प्रतीत नहीं होता क्योंकि इसके लिए समय नहीं मिलता। मेरा किराये का एक छोटा घर है। इसके आलमीरा, बक्सा, अटैची एवं पलंग में बने बक्सा में यदि गौर किया जाये तो ज्यादातर मेरे कपड़ें मिलेंगे।

ऐसा नहीं है कि मैं या मेरे पिताजी इतने संपन्न थे कि मेरे लिए कपडा खरीदने के लिए उत्साहित रहते थे। मुझे आज भी याद है कि मैं मैट्रिक तक हाफ पैंट एवं बुशर्ट में गांव के स्कुल में पढ़ा हूँ। मेरे लिए फुल पैंट तब सिलाया गया जब मैं बोर्ड का परीक्षा देने शहर के स्कुल में जाना था उस समय बेलबाटम का जमाना था। उसी डिज़ाइन का कपड़ा शौक से सिलवाया गया था। जिसको मैं स्नातक की पढाई तक पहना।

अभी मेरे पास मौसम, समय या समाज-परिवार में होने वाले उत्सवों के अनुसार कई वेराईटीज और डिज़ाइन से कपड़े उपलब्ध है। जैसे सफारी सूट, कैजुअल ड्रेस, कुर्ता-पायजामा, जाड़े वास्ते श्वेटर, जैकेट एवं कौट्सुल इत्यादि। अभी भी मुझे कोट-पेंट (सूट) का इंतेज़ार है कि कब ससुराल या कोई सम्बन्धी से उपहार के रूप में मिल जाये।

ऐसा नहीं है कि सारे कपड़े मैं स्वयं का शौक के लिए इकठ्ठा कर रखा है। अब तो मैं उसे जरूरतमंदों को देने लगा हूँ। मेरे संपर्क में रहने वाला रिक्शा वाला, ठेला वाला या सहपाठी तथा सहयोगी या सम्बन्धी जिनको भी हमें लगता है ख़ुशी से अपने कपड़े दे देता हूँ।

मैं कपड़ा को पहनावा, फैशन के अनुसार कभी नहीं पहनता मैं उसे अपनी स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए जरूरत के अनुसार पहनता हूँ। चूँकि अलग-अलग वेराईटीज के कपड़ा उपलब्ध है इसलिए उत्सव के अनुसार जरुर पहनता हूँ। मैं जींस पेंट से हमेशा दूर रहा हूँ।

कपडा को मेंटेन रखना वैसा ही है जैसे पापड़ दलना। खैर, इसमें मेरी कोई भूमिका नहीं है सारा श्रेय पत्नी को जाता है। मैं तो जब जो चाहता हूँ पहन लेता हूँ। खोलने के बाद उसकी सफाई तथा आयरन की जिम्मेदारी उन्हीं की होती है। एक ख़ास बात है इसका मेंटेनेंस वे ख़ुशी पूर्वक एवं बिना शिकायत के करती हैं। यही कारण है कि पुराना से पुराना कपड़ा भी जब पहनता हूँ तो वह नया जैसा लगता है।

कपड़ा के विषय में मेरा मानना है कि यदि संभव हो तो इसे जरुरत एवं समय के उपयोगिता के अनुसार जरुर पहने एवं दिखावा से दूर रहें। दिखने के लिए आर्थिक व्यय कभी न करें।

***(लेखक स्वयंसेवी संस्था में अकाउंट ऑफिसर हैं,***

***bhushanprasad4411@gmail.com)***

# क्या है झारखंड की जनता को नयी सरकार से उम्मीद?

* रूपेश कुमार सिंह

***पिछले पांच सालों से विप्रक्ष में रहते हुए झामुमो ने जिस-जिस आंदोलन को समर्थन किया व भाजपा सरकार की जिन-जिन जनविरोधी नीतियों के खिलाफ उन्होंने सड़क से लेकर विधानसभा तक में आंदोलन किया, अब जब वे खुद सरकार में होंगे, तो उन सवालों पर उनका रूख क्या होगा?***

30 नवंबर से 20 दिसंबर तक पांच चरणों में हुए विधानसभा चुनाव का परिणाम कल (23 दिसंबर) आ गया है। उम्मीद के अनुसार ही महागठबंधन (झामुमो-कांग्रेस-राजद) को स्पष्ट बहुमत (झामुमो-30, कांग्रेस-16, राजद-1) के साथ 81 सदस्यीय विधानसभा में 47 सीटें मिली हैं और सत्तासीन भाजपा को मात्र 25 सीटें मिली हैं। यहां तक कि झारखंड में पहली बार 5 साल तक झारखंड के मुख्यमंत्री रहने वाले रघुवर दास को भी अपनी सुरक्षित सीट जमशेदपुर पूर्वी से हार का सामना करना पड़ा है। इस चुनाव में एक तरफ एनडीए (भाजपा, जदयू, लोजपा, आजसू) ने अलग-अलग चुनाव लड़ा, वहीं दूसरी तरफ महागठबंधन में तीन मजबूत दलों (झामुमो-कांग्रेस-राजद) ने पूरी एकजुटता के साथ चुनाव को लड़ा। वाम मोर्चा ने महागठबंधन से अलग होकर चुनाव लड़ा, लेकिन कई सीटों पर वामदलों के प्रत्याशी आपस में भी लड़े। वामपंथी दलों में सिर्फ भाकपा (माले) लिबरेशन को ही एक सीट मिली, जबकि मार्क्सवादी समन्वय समिति (मासस) को झारखंड में पहली बार एक भी सीट नहीं मिली। 2014 के चुनाव में वामपंथी पार्टियों को 2 सीटें मिली थी, जिसमें निरसा से मासस के अरूप चटर्जी व धनवार से भाकपा (माले) लिबरेशन के राजकुमार यादव जीते थे। इस बार इन दोनों को तीसरा स्थान मिला।

अब जबकि चुनाव परिणाम आने के बाद लगभग स्पष्ट हो चुका है कि महागठबंधन के मुख्यमंत्री का चेहरा बनाए गये झामुमो के हेमंत सोरेन अगले मुख्यमंत्री होंगे (शायद 27 या 28 सितंबर को रांची के मोहराबादी मैदान में वे शपथ लेंगे)। तब सवाल उठता है कि क्या झारखंड के आदिवासी-मूलवासी जनता की उम्मीदें नयी सरकार से पूरी होगी।

## नयी सरकार से उम्मीदें

पिछले पांच सालों से विप्रक्ष में रहते हुए झामुमो ने जिस-जिस आंदोलन को समर्थन किया व भाजपा सरकार की जिन-जिन जनविरोधी नीतियों के खिलाफ उन्होंने सड़क से लेकर विधानसभा तक में आंदोलन किया, अब जब वे खुद सरकार में होंगे, तो उन सवालों पर उनका रूख क्या होगा? क्योंकि झारखंड के आदिवासी-मूलवासी जनता के सामने आज भी वे तमाम सवाल जस के तस खड़े हैं और वे सवाल उनके जीवन-मरण से जुड़े हुए हैं।

एक बात तो स्पष्ट है कि झारखंड गठन के 19 साल बाद भी झारखंडी जनता के अलग राज्य के साथ जो आकांक्षा जुड़ी हुई थी, वह पूरी नहीं हुई है और इसे पूरा नहीं होने के पीछे सभी सत्ताधारी राजनीतिक दल दोषी हैं, चाहे वह झामुमो ही क्यों न हो। झामुमो ने सिर्फ कुर्सी की चाहत में आदिवासी-मूलवासी विरोधी भाजपा के साथ मिलकर सरकार बनाई थी व भाजपा को झारखंड में फलने-फूलने का मौका दिया। आज झामुमो को अपनी गलती सुधारने का मौका मिला है, इसलिए झारखंड की नयी सरकार को केंद्र की ब्राह्मणीय-हिन्दुत्व-फासीवादी नरेंद्र मोदी सरकार की उन तमाम नीतियों के खिलाफ (जो झारखंड की आदिवासी-मूलवासी जनता के साथ-साथ पूरे देश की मेहनतकश जनता के हित के खिलाफ है) डटकर व तनकर खड़ा होना चाहिए, ताकि झारखंड की जनता की उम्मीदों पर कुठाराघात न हो।

झारखंड की जनता की उम्मीदों के मुताबिक नयी सरकार को शपथ ग्रहण के बाद अविलंब निम्नलिखित घोषणाएं करनी चाहिए, जिसपर झारखंड की जनता पिछले दिनों आंदोलित रही है-

1. एनआरसी व सीएए को झारखंड में लागू न करने की घोषणा करनी चाहिए
2. पत्थलगड़ी आंदोलन के दौरान हजारों लोगों पर दर्ज देशद्रोह के मुकदमे को वापस लेना चाहिए और इस मुकदमे के तहत जेल में बंद सभी आंदोलनकारियों की रिहाई की घोषणा करनी चाहिए,
3. पारा शिक्षकों समेत सभी अनुबंधकर्मियों की नौकरी को स्थायी करनी चाहिए,

4. 9 जून 2017 को गिरिडीह जिला में कोबरा द्वारा मारे गये डोली मजदूर मोतीलाल बास्के की हत्या की न्यायिक जांच करवानी चाहिए,
5. सीएनटी व एसपीटी एक्ट में भविष्य में किसी भी प्रकार के संशोधन न करने की शपथ लेनी चाहिए,
6. आदिवासी-मूलवासी विरोधी भूमि अधिग्रहण संशोधन को कभी लागू नहीं करने की घोषणा करनी चाहिए,
7. सरकारी नौकरियों में स्थानीय लोगों को प्राथमिकता देने की घोषणा करनी चाहिए,
8. देश-विदेश में पूंजीपतियों के साथ किये गये तमाम जनविरोधी एमओयू को अविलंब रद्द कर देना चाहिए,
9. अडानी को गोड्डा में पावर प्लांट के लिए दी गयी भूमि वापस ले लेनी चाहिए,
10. मजदूर संगठन समिति समेत कई प्रगतिशील-जनवादी संगठनों पर झारखंड सरकार द्वारा लगाए गये प्रतिबंध को वापस लेना चाहिए,
11. ग्रामीण इलाकों से अर्द्धसैनिक बलों के कैंपों को अविलंब हटाना चाहिए,
12. माओवादी का टैग लगाकर फर्जी मुकदमे के तहत जेल में बंद आदिवासियों-मूलवासियों की अविलम्ब रिहाई सुनिश्चित करनी चाहिए,
13. डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, रांची का नाम बदलकर बिरसा मुंडा विश्वविद्यालय करना चाहिए,
14. माब लिंचिंग के आरोपियों को कठोर सजा सुनिश्चित की जानी चाहिए,
15. राज्य में साम्प्रदायिक तत्वों पर कड़ी निगरानी रखने की व्यवस्था करनी चाहिए,
16. संथाली, मुंडारी, हो, कुड़ूक, खोरठा आदि क्षेत्रीय भाषा व क्षेत्रीय लिपि को भी प्रोत्साहित करना चाहिए,
17. आदिवासी-मूलवासी जनता की इज्जत-अस्मिता व जल-जंगल-जमीन पर उनके परंपरागत अधिकार की रक्षा का संकल्प लेना चाहिए,
18. राज्य में अल्पसंख्यक समुदाय के अधिकारों की रक्षा की भी गारंटी की घोषणा करनी चाहिए,
19. किसानों के कर्ज को माफ कर देना चाहिए,
20. उच्च शिक्षा को आदिवासी-मूलवासी जनता के लिए सुलभ करने की हरसंभव कोशिश करनी चाहिए।

***(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं,*** singh0085.rupesh@gmail.com***)***

# फटा जूता

* नीरजा हेमेन्द्र

***जिस हिसाब से विगत् पन्द्रह वर्षों में इस शहर का दायरा बढ़ा है, उसी अनुपात में शहर में अमीरों की संख्या भी बढ़ी है। देखते-देखते पूरा शहर जैसे अमीरों का शहर हो गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि निर्धनता मात्र मलिन बस्तियों और झुग्गी-झोपड़ियों में ही रह गयी है। अब टूटी चप्पलें बनवाता कौन है? जूते-चप्पलें टूट जाने पर लोग दूसरी नयी ले आते हैं। मोची की दुकानें टूटती जा रही हैं।***

सारा समान रख लिया, कुछ रह तो नहीं गया? सोलंकी ने एक दृष्टि जमीन पर बिछी बोरी पर डाली। हाँ, सब कुछ रख लिया मन ही मन आश्वस्त होते हुए उसने अपनी छोटी-सी बकसिया बन्द की। जमीन पर बिछी बोरी को लपेटकर सिर पर रखा। बकसिया को सिर पर रखी बोरी पर रख संतुष्ट होते हुए घर की ओर चल पड़ा। वह खुश था कि आज इतनी कमाई हो गयी थी कि घर में सभी के भोजन की आवश्यकता पूरी हो जायेगी। वरना कभी-कभी तो ऐसा भी हो जाता है कि शाम के भोजन की सामग्री लाने भर की कमाई नहीं होती, ऐसे में बनिये की दुकान से उधार सामान लाना पड़ता है। लगभग दस मिनट पैदल चलने के उपरान्त वह अपने घर पहुँच गया। एक कमरे के अपने घर में एक कोने में बकसिया रख कर वह चारपाई पर बैठ गया। उसकी पत्नी केवली कमरे के कोने में बने चूल्हे के पास बैठी कुछ कर रही थी। कदाचित् शाम का भोजन बनाने की तैयारी करना चाह रही होगी। किन्तु आटा-दाल न होने के कारण कुछ कर नहीं पा रही होगी। सोलंकी जानता है कि वह चूल्हे के पास बैठी उसी की प्रतीक्षा कर रही है कि कब सोलंकी आये और कब घर में उस दिन का आटा-दाल आये और भोजन बने। यह प्रतिदिन का ही तो काम है जब केवली शाम को सोलंकी के शीघ्र घर आने की प्रतीक्षा इसी प्रकार करती है।

सोलंकी झोपड़ी के बाहर निकल अपने छोटे लड़के को ढूँढ़ने लगा। उसे घर के लिए सौदा मंगाना था। उसका लड़का सामने एक पान की दुकान पर बैठा दिखाई दिया।

‘नरेन... ओ नरेन’. उसने अपने लड़के को आवाज लगाई।

“बोलो बाबू.....” लड़के ने वहीं से ऊँची आवाज में कहा।

“हियाँ आ, अम्मा से पूछ कर बनिये की दुकान से रसोई का सामान ले आ।” सोलंकी ने कहा। उसकी भी आवाज कुछ ऊँची थी ताकि नरेन सुन सके। नरेन को घर की ओर आता देख सोलंकी जेब से पैसे निकालने लगा।

“हाँ, ध्यान रखियो पैसे इतने ही हैं। सारा सामान सम्हाल कर ले अइयो।” सोलंकी ने दस-दस के कुछ नोट और कुछ सिक्के नरेन के हाथ पर रखते हुए कहा।

पैसे लेकर नरेन कमरे के भीतर अम्मा के पास सामान पूछने चला गया। सोलंकी सड़क पर लगे नल पर हाथ मुँह धोने चला गया।

इस शहर के फुटपाथ के एक कोने में सोलंकी अपनी दुकान लगाता है। उसे ठीक-ठीक कुछ याद नहीं कब से।।? किन्तु इतना तो याद है कि बचपन से। प्रतिदिन सामान सजाकर बैठना तथा शाम का धुँधलका घिरते ही सामान समेटकर टिन की छोटी बकसिया में रखकर घर को चल देना यही उसकी दिनचर्या है। यही करते हुए उसका जीवन व्यतीत हो गया। जीवन के शेष दिन भी कट ही जायेंगे। उसे अपनी नहीं, उसे तो फिक्र है अपने लड़कों की।

आज सुबह के नौ बजे सोलंकी बोरी बिछाकर अपनी दुकान लगा रहा था। अभी वो कुछ चीजें ही बोरी से निकाल पाया था कि-

“अबे, ये जूते सिलकर ठीक से पॉलिश लगा दे.....” किसी पुरूष के स्वर सुनते ही हाथ में पकड़े धागे की रील को वहीं रख उसने गर्दन उठाई। सामने पैण्ट-कमीज पहने, आँखों पर महंगा नज़र का चश्मा चढ़ाए एक भद्र व्यक्ति खड़ा था।

“जी साब! अभी कर देता हूँ।” कहकर सोलंकी ने तीव्र गति से हाथ का सामान वहीं रख उस पुरूष के पैरों के पास से जूता उठा लिया तथा उसे घुमा-घुमा कर देखने लगा कि कहाँ से मरम्मत करनी है। एक स्थान पर जूते का मुँह ज़रा-सा खुला दिखाई दिया। उसने उसे बड़े अच्छे से सिल दिया।

जूता महंगा दिख रहा था तभी तो वो इतनी बड़े साहब, इतनी बड़ी गाड़ी से उतर कर उससे जूते सिलवाने आये हैं। सोलंकी ने जूते में पॉलिश लगाकर बढ़िया से चमकाकर साहब के पैरों में पहना दिया। वह मन ही मन खुश था कि आज उसकी अच्छी बोहनी हो जायेगी। यदि बोहनी अच्छी हो जाये तो पूरे दिन अच्छी कमाई हो जाती है।

“ये लो पैसे।” कहकर साहब ने जेब से सिक्का निकालकर सोलंकी के सामने बोरी पर उछाल दिया।

पाँच रूपये का सिक्का सामने देखकर सोलंकी उम्मीद से साहब की ओर देखने लगा। कदाचित् साहब एक-दो और सिक्के जेब से निकाल कर उसकी ओर उछाल दें, किन्तु साहब पलटकर गाड़ी में बैठ चुके थे। सिक्का उंगली में फँसाये सोलंकी सोच रहा था कि इस महंगाई के जमाने में पाँच रूपये.....? धागे व अच्छी पॉलिश के पैसे ही दस रूपये से अधिक के गये। ऊपर से इतनी देर तक पॉलिश कर जूते को चमकाता रहा, उस परिश्रम की कोई कीमत ही नहीं। वह बड़ी देर तक सिक्के को उलटता-पुलटता रहा। साहब की गाड़ी धीरे-धीरे आगे बढ़ती जा रही थी।

“मुझे साहब से और कुछ पैसे मांगने चाहिए थे।” सोलंकी मनहीं मन बुदबुदा उठा।

“मैं यही ग़लती कर जाता हूँ। जो सामर्थवान साहब लोग हैं उनसे पैसे नहीं मांग पाता। जब पैसे देकर चले जाते है तब ध्यान आता है कि मजूरी कम मिली।” सोलंकी मन ही मन बुदबुदाता रहा तथा दुकान सजाता रहा।

सड़क पर धीरे-धीरे आवाजाही व लोगों की भीड़ बढ़ती ही जा रही थी। यही समय है लोगों के ऑफिस व स्कूल-कॉलेज में समय से पहुँचने का। इसी समय किसी की चप्पल टूटती है तो किसी के जूते खुल जाते हैं। इसी समय सोलंकी दो-चार पैसे कमा लेता है।

“बाबा..... ओ बाबा। मेरी सैण्डिल टूट गयी है टाँक दो।” एक युवक के स्वर से सोलंकी की तन्द्रा भंग हो गयी।

सामने एक युवक सैण्डिल उतार कर खड़ा था। देखने में विद्यार्थी लग रहा था। सैंडिल पुरानी थी। पहले एक बार और टाँकी जा चुकी थी।

“लो बेटा।” कहते हुए सोलंकी ने मजबूती से उसकी सैण्डिल टाँक कर उसे दे दी।

“कितने पैसे हुए बाबा?” कहते हुए जेब में हाथ डाल कर वह सोलंकी की ओर देखने लगा।

“दस रूपये।” सोलंकी ने कहा।

युवक ने जेब में से दस का नोट निकालकर सोलंकी की ओर बढ़ाया। सोलंकी ने दोनो हाथों से नोट पकड़ लिया। युवक तेजी से चला गया। उसने तो युवक की सैण्डिल में बस टाँके ही लगाये थे फिर भी उसने दस रूपये दिए। एक वो पैसे वाले साहब थे जिन्होंने अपनी इच्छा से उसकी मजूरी तय कर दी थी। “वाह री दुनिया....” कहकर वो पुनः मनहीं मन बड़बड़ा उठा।

आज से नहीं बल्कि लगभग चालीस वर्ष से अधिक हो गए हैं, सोलंकी यहीं बैठ कर जूते-चप्पल की मरम्मत की दुकान लगाता रहा है। तब से आज तक इस शहर ने अनेक बदलाव देखे हैं। उस समय ये शहर इतना बड़ा नहीं था। इस पुल का जिसके नीचे आज सोलंकी बैठता है, नामोनिशान नहीं था। ये सड़क तो थी किन्तु इतनी चिकनी नहीं, कुछ-कुछ पथरीली-सी उबड़-खाबड़ थी। यहाँ इस कोने पर एक वृक्ष हुआ करता था। जिसकी छाँव में सोलंकी अपनी दुकान लगाया करता था। तब भी सोलंकी बोरी बिछा कर जूते सिला करता था। आज भी सोलंकी बोरी बिछाकर जूते सिलता है। अब वो वृक्ष भी नहीं रहा। पुल बनने के साथ वो वृक्ष काट दिया गया। पहले सोलंकी देर तक दुकान लगाता था। तब सोलंकी युवा था। अब शाम का धुँधलका होने से पूर्व दुकान उठा लेता है। उसे अब सुई में धागा दिखता नहीं है। ढिबरी जलाने के बावजूद वो ठीक से सिलाई नहीं कर पाता। इसीलिए शाम ढलने से पूर्व ही दुकान समेट लेता है। दुकान के नाम पर पॉलिश की कुछ डिबिया, दो-तीन ब्रश, कील-हथौड़े, धागे की रील, तीन टाँग का फर्मा तथा एक बोरी जिसे बिछाकर सोलंकी की दुकान लगती है। सब कुछ इस छोटी-सा बकसिया में आ जाता है। शहर के पुल के कोने की फुटपाथ तथा ये छोटी-सी बकसिया ही उसकी रोजी-रोटी है। शहर बड़ा होता गया। धीरे-धीरे सब कुछ बदलता गया। सोलंकी की बोरियां फटती रहीं। उन्हें बदलकर दूसरी बोरी बिछाता रहा। साँवले, छोटे कद का युवा सोलंकी आज साठ-पैंसठ वर्ष का बूढ़ा हो गया। उम्र के थपेड़ों ने उसका कद और छोटा कर दिया है। तब से आज तक जूते-चप्पल पहनने वालों के साथ-साथ जूते चप्पलों की डिजाईन, फैशन और नमूने भी बदल गए। तब अधिकांश पुरूष काले चमड़े के पम्प जूते या फीते वाले जूते पहनते थे। जूते फटते रहते थे, लोग

सिलवाते रहते थे। एक जूता कई-कई महीनों तक चलता था। कभी-कभी वर्षों तक। तब एक मोहल्ले में कई -कई मोचियों की दुकानें होती थीं। पुरूषों के जूते ही नहीं, औरतों, बच्चों के जूते चप्पलें सिलने, टाँकने का काम खूब मिलता था।

अब समय बदल गया। लोगों के पास फैशन के हिसाब से कई-कई जोड़ी जूते-चप्पलें होतीं हैं। कई-कई होने के कारण टूटती कम हैं। जिस हिसाब से विगत् पन्द्रह वर्षों में इस शहर का दायरा बढ़ा है, उसी अनुपात में शहर में अमीरों की संख्या भी बढ़ी है। देखते-देखते पूरा शहर जैसे अमीरों का शहर हो गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि निर्धनता मात्र मलिन बस्तियों और झुग्गी-झोपड़ियों में ही रह गयी है। अब टूटी चप्पलें बनवाता कौन है? जूते-चप्पलें टूट जाने पर लोग दूसरी नयी ले आते हैं। मोची की दुकानें टूटती जा रही हैं। पहले की तरह अधिक दुकानें अब नहीं रह गयी हैं। जो थोड़ी बहुत रह गयी हैं, वे भी अब चलती नहीं हैं। इस कारण जीविका चलाना अब कठिन होता जा रहा है। महंगाई बढ़ गयी है, किन्तु मजूरी कमोवेश वही रह गयी है।

सोलंकी शहर के मध्य बसी एक मलिन बस्ती में रहता है। पहले यह बस्ती शहर के किनारे बसी थी। आबादी बढ़ती गयी और शहर का विस्तार चारों ओर होता गया। धीरे-धीरे यह बस्ती किनारे से शहर के मध्य में आ गयी। अब इस बस्ती में दलित जातियों के अतिरिक्त कुछ अन्य जातियों के लोग भी रहने लगे हैं। शहर में सुख-सुविधायें जैसे कि बिजली-पानी, पक्की सड़कें, नालियाँ हरे-भरे पार्क आदि विकसित हो गये हैं। किन्तु शहर के बीचोबीच स्थित यह मलिन बस्ती कमोवेश आज भी वैसी ही है, जैसी आज से वर्षों पूर्व थी।

सोलंकी के घर में उसकी बूढ़ी पत्नी और दो बेटे हैं। बेटों को तरक्की करते, आधुनिक होते बढ़ते शहर की हवा लग गयी है। वे यह पुश्तैनी काम नहीं करना चाहते हैं। दिन-भर इधर-उधर घूमा करते हैं किन्तु सोलंकी का हाथ नहीं बँटाते। सोलंकी सोचता है कि यदि वे यह जूते-चप्पलें सिलने का पुश्तैनी काम नहीं करेंगे तो क्या करेंगे? वे अधिक पढ़े-लिखे भी तो नहीं हैं। सरकारी प्राइमरी स्कूल से पाँचवीं तक की पढ़ाई करने वाले उसके बेटे आखिर करेंगे भी तो क्या करेंगे? वे अपनी रोजी-रोटी कैसे चलायेंगे? सोलंकी चिन्तित हो उठता है। पैसों की आवश्यकता कभी-कभी मनुष्य को अक्ल भी देती है। घर में पैसों की तंगी देखते हुए दोनों बेटों ने अन्ततः अपने-अपने योग्य रोजगार ढूँढ़ लिया है। एक ने होटल में बैरा की नौकरी कर ली, दूसरे ने बैण्ड बाजे के ग्रुप के साथ शादी-व्याह में बाजा बजाने का काम तलाश लिया। सोलंकी भी खुश है कि बेटे बाहर  का काम करेंगे तो जाति जानकर लोग उन्हें हिकारत और ओछी दृष्टि से तो नहीं देखेंगे? उनका अपमान तो नहीं करेंगे। उसके लड़के छोटी जाति के होने की जलालत से बच जायेंगे। लड़के भी तो यही चाहते हैं।

उसके बड़े बेटे जुगनू को होटल में नौकरी करते हुए छः महीने हो गए थे। वह होटल का काम समझ गया था तथा मन लगा कर काम करने लगा था।

“बाबू, अब हम होटल की रसोई में शेफ की मदद भी करते हैं। धीरे -धीरे हमें भोजन बनाना भी आ जायेगा। मलिक ने कहा है कि जब हमें ठीक से भोजन बनाना आ जायेग तब वो हमारा प्रमोशन कर देंगे। तनखाह बढ़ा देगें।” बेटे की बात सुनकर सोलंकी मुस्करा देता। आसमान की ओर देखकर दोनों हाथ जोड़ देता है।

“बाबू, अपने मोहल्ले से कऊनो जाकर होटल के मालिक से हमार जात बता आवा है।” एक शाम सोलंकी दुकान उठाकर सिर पर बकसिया रखे हुए घर पहुँचा तो उसके बड़े बेटे जुगनू ने उससे कहा। बेटे की बात सुनते ही सोलंकी सन्न रह गया।

“फिर का हुआ तुम्हरे काम का...?” सोलंकी ने चिन्तित होते हुए पूछा।

“कुछ नहीं बाबा.... काम पर रखते समय मालिक ने हमसे जात नाही पूछा तो हम नाही बताये रहे। मालिक कहें लगे कि हम जाति-धर्म नहीं साफ-सफाई, अच्छा काम देखते हैं।” बेटे की बात सुनकर सोलंकी को तसल्ली हुई। वो सोचने लगा कि सचमुच ये शहर विकसित और बड़ा हो गया है। लोगों के पहनावे में ही नहीं सोच में भी बदलाव आया है।

आज सोलंकी दुकान पर खाली बैठा था। सुबह से कोई ग्राहक नहीं आया था। वह व्याकुलता से किसी ग्राहक के आने की प्रतीक्षा कर रहा था।

अबकी बार..... की सरकार...... मोहर लगेगी...... निशान पर। नारों की आवाज पुल की ओर आती जा रही थी। झंडे पकड़े भीड़ को पुल की ओर आते देख सोलंकी ने अपनी बोरी का कोना समेट कर अन्दर मोड़ लिया। भीड़ का क्या भरोसा बोरी पर पैर रखते कुचलते चले जायें। पुल के किनारे खड़े दो-चार फलों के ठेले वाले अपने ठेलों के पास पूर्ववत्

खड़े थे। पैदल भीड़ के साथ बड़ी-बड़ी गाड़ियों का काफिला आगे बढ़ता जा रहा था। काफिला उन सबके पास आकर रूक गया। आगे वाली गाड़ी से चार-पाँच व्यक्ति उतरे। उनमें से एक व्यक्ति जो सफेद कुर्ता-पायजामा पहने हुआ था, वो दोनों हाथ जोड़े हुए उनकी ओर बढ़ा। प्रतीत हो रहा था वही व्यक्ति चुनाव लड़ रहा है। फल के ठेले वालों की ओर मुखातिब होते हुए उनमें से एक ने उस व्यक्ति की ओर संकेत करते हुए कहा कि अबकी बार....... भईया के चुनाव चिह्नन....... पर मोहर लगाकर विजयी बनाना है। जो व्यक्ति चुनाव में खड़ा था वो हाथ जोड़े उनकी ओर देखकर मुस्करा रहा था। वो सब अब सोलंकी की ओर बढ़ रहे थे।”

“अबकी भाई को वोट देना है। तुम सबकी बस्ती में पक्की नाली, बनवाई जायेगी, साफ पानी के लिए हैण्डपम्प लगेगा और समय-समय पर साफ-सफाई होगी और गलियाँ भी पक्की करायी जायेंगी। अपनी बस्ती में सबको कहना कि ...... पर मोहर लगाकर ....... भईया को जिताना है।” उनकी बात सुनकर सोलंकी भी उनकी ओर देखकर दोनों हाथ जोड़कर मुस्करा पड़ा।

वे चले गए। सोलंकी सोचता रहा कि- यहाँ बैठे-बैठे उसने अनेक चुनाव देखे हैं। देखते-देखते शहर की सूरत बदल गयी। नहीं बदली तो नेताओं की बात। पहले भी चुनाव में नेता सोलंकी की बिरादरी वालों से जो बात कहते थे, आज भी वही बात कहते हैं। सड़कें, पक्की नालियाँ, हैण्डपम्प, साफ-सफाई। आजादी के पैंसठ वर्षों पश्चात् भी बस्ती वालों को यही नहीं मिल पाया? सुना है दुनिया आगे बढ़ रही है। सब ओर तरक्की हो रही है। तो शहर के मध्य स्थित उसकी मलिन बस्ती में विकास की रोशनी क्यों नहीं पहुँची? क्यों सोलंकी आज तक उसी बोरी पर बैठा रह गया, जिस पर आज से पैंसठ वर्ष पूर्व बैठा था? बोरियाँ फटती रहीं, बदलती रहीं, किन्तु उस पर बैठने वाले की स्थिति वही रही, जो आज से पैंसठ वर्ष पूर्व थी। जाति, धर्म के भेद मिटाकर उनको भी सम्मान देने की बात क्यों नहीं करते आज के नेता? आज ये युवा नेताजी हाथ जोड़े फिर सामने खड़े हैं। सड़कें और पक्की नाली बनवाने की बात करते हैं। सोलंकी मुस्करा पड़ता है..... नेताजी पर.... इस शहर पर..... स्वंय पर या..... अपनी जाति पर..... न जाने किस पर..... नहीं जानता। बस मुस्करा पड़ता है। इस शहर की मानसिकता कभी-कभी उसे उस फटे जूते के समान लगती है जिसे बार-बार सिलने के पश्चात् वह उसी स्थान से फटता है जहाँ उसकी सिलाई की गयी होती है। समाज की सड़ांध को जितना साफ करने का प्रयत्न किया गया, जाति और धर्म के रास्ते ही सड़ांध ने समाज में प्रवेश किया है। यह नया-नवेला, विकसित शहर कहीं फटे जूते-सा तो नहीं है? हाँ, फटे जूते-सा। सोलंकी मुस्करा पड़ता है।

***(लेखिका लखनऊ, उ.प्र., में सरकारी विद्यालय में शिक्षिका हैं,***
neerjahemendra@gmail.com*)*

## गेहूँ का दाना

मैं इक दाना गेहूँ का
अपनी कथा सुनाता हूँ
मिट्टी में पैदा होता हूँ
सोना मैं कहलाता हूँ|

मैं इक दाना -------------
उस पैदा करने वाले के
मन की व्यथा सुनाता हूँ
पानी नहीं पसीने से
मैं तो सींचा जाता हूँ

मैं इक दाना ------------
है ख़ाली हाथ बोने वाला
उसे खून के आंसू रुलाता हूँ
धनवानों के गोदामों में
पड़ा-पड़ा सड़ जाता हूँ|

मैं इक दाना -------------
रोटी को तरसे अन्नदाता
मैं बिस्कुट में मुस्काता हूँ
मोल उसकी मेहनत का
कहाँ उसे लौटता हूँ ?

मैं इक दाना ----------
बैसाख के सुनहरे मौसम में
मै जब पूरा पक जाता हूँ
उस सच्चे चेहरे पर तब भी
मुस्कान नहीं ला पता हूँ|

मैं इक दाना -----------
बचकर आंधी -तूफानों से
मैं उसके घर जाता हूँ
उतारते -उतारते क़र्ज़ उसका
मैं कहाँ बच पता हूँ ?

मैं इक दाना ----------
उस लाचार-भूखे हलधर का
मैं एक रूप बन जाता हूँ
भर कर औरों के पेट
मैं खुद सूली चढ़ जाता हूँ|
मैं इक दाना गेहूँ का --------
मैं इक दाना गेहूँ का -----

डॉ दलजीत कौर
drdaljitkaursaini@gmail.com

## प्राणदायिनी पृथ्वी

पूजते है सब सूर्य-शनि को,
उसके बारे मे नही है सोचते।
देती है जो इतना सब कुछ,
पता नही प्राणदायिनी पृथ्वी को,
लोग क्यों नही है पूजते?

जिस पर उगाया जाता है अन्न,
नदियो का जल पीकर जिसका,
निर्मल होता हमारा मन।
जिस पर जीया जाता है जीवन,
फिर भी लोग इसके अहसानो को भूलकर,
रहते है सदा उस पर थूकते।
पता नही प्राणदायिनी पृथ्वी को,
लोग क्यों नही है पूजते ?

पृथ्वी से ही बनती काया,
सहती धूप देती छाया।
देती उसको भी सुख,
जिसने उसको दुख पहुँचाया।
फिर भी हवाओ मे,
इसके बचाओ-बचाओ के,
स्वर है गूंजते।
पता नही प्राणदायिनी पृथ्वी को,
लोग क्यों नही है पूजते?

सब चाहते है इस पर अधिकार,
इसके संरक्षण की कोई नही है सोचता।
गिरते है जब इसके आंसू,
उनको कोई नही है पोंछता।
ऐसे लोग ही बाद मे,
दो गज जमीन के लिए है जूझते,
पता नही प्राणदायिनी पृथ्वी को,
लोग क्यों नही है पूजते?

पुनीत कुमार
puneetsir161989@gmail.com

# आप भी लिखें ...

पाठकों से लेखों पर विचार आमंत्रित है.

लेखकों से आलेख, कहानी, केस अध्ययन, साक्षात्कार, कविता, छायाचित्र व कार्टून आमंत्रित है.

**पत्रिका के संचालन में आर्थिक सहयोग करें.**

**Website: hastakshep.co.in**

**Email:  hastakshep4change@gmail.com**
**article@hastakshep.co.in**

**https://www.facebook.com/hastakshepmagazine/#**